ख्याल गायन के युगल गायक पं. राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का भारतीय संगीत को योगदान

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय (अमृतसर) के तत्वावधान के अंतर्गत हंसराज महिला महा विद्यालय (जालंधर) के गायन-संगीत विभाग में एम. ए. की उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध परियोजना

निर्देशक, निरीक्षक

डॉ प्रेम सागर ग्रोवर,श्रीमती राधिका सोनी

शोधार्थी

अनुष्का शर्मा

गायन संगीत विभाग
हंसराज महिला महा विद्यालय
जालंधर
2022

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि अनुष्का शर्मा ने प्रस्तुत लघु शोध परियोजना "ख्याल गायन के युगल गायक पं. राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का भारतीय संगीत को योगदान" लगन एवं परिश्रम से संपन्न किया है। ऐसा करते हुए शोधार्थी ने शोध प्रक्रिया की तकनीकों को आत्मसात करने का भरसक प्रयास किया है। पाठ्यक्रम के निर्देशानुसार शोधार्थी ने विषय का चयन करते हुए शोध प्रक्रिया का सन्तोषजनक निर्वहन किया है।

निर्देशक के हस्ताक्षर

निरीक्षक के हस्ताक्षर

घोषणा पत्र

मैं अनुष्का शर्मा एम.ए. समैस्टर 4 की छात्रा घोषणा करती हूँ कि मैंने यह लघु शोध परियोजना अपनी मेहनत तथा लगन के साथ पूर्ण की है। मेरे इस शोध कार्य के निर्देशक डॉ. प्रेम सागर तथा निरीक्षक श्रीमती राधिका सोनी (सहायक अध्यापिका) के कुशल मार्ग दर्शक के अधीन सम्पन्न हुई है।

शोधार्थी के हस्ताक्षर

Anushka Sharma

शोधार्थी का नाम

अनुष्का शर्मा

[ ]

विषय सूची

खयाल गायन के युगल गायक पं० राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का भारतीय संगीत को योगदान

पहला अध्याय :- पं० राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का जीवनवृत्त एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

1.1 पं० राजन- साजन मिश्र का जन्म

(1.1.1) पं० राजन मिश्र एवं पं० साजन मिश्र का बचपन एवं माता-पिता

(1.1.2) पं० राजन - साजन मिश्र का संगीत की ओर आकर्षण एवं दिनचर्या

(1.1.3) पं० राजन - साजन मिश्र की प्राथमिक शिक्षा

(1.1.4) रियाज़ विधि

1.2 संगीत परम्परा

1.3 पण्डित राजन- साजन मिश्र का कलाकार के रूप में मंच प्रदर्शन

1.4 गृहस्थ जीवन के रूप में

1.5 पं० राजन- साजन मिश्र की सांगीतिक उपाधियाँ

दूसरा अध्याय :- शोध प्रविधि

2.1 समस्या कथन

2.2. अध्ययन का उद्देश्य

2.3 अध्ययन का महत्व

2.4 शोध विधि

2.5 दत्त स्त्रोत

2.6 शोध का सीमांकन

तृतीय अध्याय :- पं० राजन एवं साजन मिश्र का भारतीय कला के क्षेत्र में बहुआयामी योगदान

3.1 पं० राजन एवं पं० साजन मिश्र के कला प्रदर्शनों का विस्तृत विवरण

3.2 पार्श्व गायकों के रूप में

3.3 आकाशवाणी कार्यक्रम

3.4 टैप रिकार्डिंग

3.4.1 राजन - साजन मिश्र की विविध टैप रिकॉर्डिंगस का ब्योरा

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ख्याल गायन के युगल गायक पं० राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का भारतीय संगीत को योगदान ÷

[ ]

पहला अध्याय

पं० राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का जीवनवृत्त एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि ÷

" सूरज चाँद संगीताकाश के राजन - साजन भाई,
जुग - जुग जीवो आँख के तारों मंगल कामना आई,
दसदिश दीन्हीं सुनाई । "[1]

हिन्दुस्तानी ख्याल गायन शैली के युगल गायक पं० राजन मिश्र एवं पं० साजन मिश्र जी का भारतीय संगीत में ऐसा नाम है जो किसी भी परिचय का मोहताज़ नहीं है जो सर्वविदित है। पद्मभूषण पं० राजन मिश्र एवं पं० साजन मिश्र जी का संगीत के प्रति योगदान, तथा शास्त्रीय संगीत में उनकी देन से पहले उनके जन्म, माता - पिता, गुरुजनों तथा उनके जीवनवृत्त का उल्लेख करना सन्दर्भसंगत है।

जीवनी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। किसी व्यक्ति के जीवन का चरित्र-चित्रण करना अर्थात किसी व्यक्ति विशेष के सम्पूर्ण जीवन वृतांत को जीवन-वृत्त या जीवनी कहते हैं। जीवनवृत्त का अंग्रेजी अर्थ "बायोग्राफी" (Biography) होता है। जीवनवृत्त में व्यक्ति विशेष के जीवन की घटित घटनाओं का कलात्मकता और सौंदर्यता के साथ चित्रण होता है। जीवन वृत्त में लेखक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन और यथेष्ट जीवन की जानकारी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करता है। जीवनी में अतीत का चित्रण और सत्य घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। जीवनवृत्त में लेखक व्यक्ति के जीवन संघर्षों के साथ - साथ उसके आन्तरिक स्वभाव और व्यक्तित्व का चित्रण करता है।

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामनाथ सुमन ने लिखा है कि "जीवनी की घटनाओं के विवरण का नाम जीवनी है। लेखक यहाँ नायक के जीवन में छिपे उसके विकास को, उसके व्यक्तित्व के रहस्य को, उसकी मुख्य जीवनधारा को खोलकर पाठकों के सामने रख देता है, वहाँ जीवनी लेखन कला सार्थक होती है।

1. डॉ० प्रेम सागर द्वारा निर्मित गीत, पत्रिका - संगीतालोक, 51 वां वार्षिक शास्त्रीय संगीत सम्मेलन, 17-18, Nov 2018

[ ]

सामान्यतः एकल व्यक्ति विशेष के जीवनवृत्त एवं उपलब्धियों को परिशीलन एवं रेखांकित करने की परम्परा एवं प्रथा चली आ रही है। परन्तु जुगलबन्दी भी कोई नवाचार नहीं है। "जुगलबन्दी का उद्देश्य भी संगीत की विशेषताओं और बारीकियों को उसी स्वाभाविक रूप में, उसी आत्मस्फूर्ती रूप में हृदयंगम कराना होता है। जिस प्रकार एक सांगीतिक प्रस्तुति में होता है।" गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, दो भाई और बहनों के युगल गायन या वादन के कई उत्कृष्ट उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत हैं।

"वर्तमान परिपेक्ष्य में कुछ गायक एवं वादक बन्धुओं ने युगल जोड़ियों के रूप में अपना विशेष एवं उल्लेखनीय भूमिका निभाई है- जैसे पं० अमरनाथ एवं पशुपतिनाथ मिश्र, डागर बन्धु, साबरी बन्धु, सिंह बन्धु, वडली बन्धु (पंजाब की सूफी गायक जोड़ी), पंडित राजन-साजन मिश्र इत्यादि। इसी श्रृंखला में बनारस जैसी पावन धरती पर जन्मे वर्तमान युग के महान कलाकार जो जनमनोरंजन एवं अपनी अद्भुत स्वर रचना से रसबद्ध करके सबको अपने संगीत से अत्यधिक प्रभावित किया।"

[2] "350 साल पुरानी संगीत परम्परा जो बनारस घराने के रूप में सामने आती है, जिसकी परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते आते रहने वाले परिवार से हैं पं० राजन-साजन मिश्र। अपने घराने की अब यह 7वीं पीढ़ी चल रही है। राजन-साजन मिश्र आज उनकी ही जीवन यात्रा का मैं शोध के रूप में वर्णन करने जा रही हूँ।

1.1 पंडित राजन-साजन मिश्र का जन्म [1] ख्याल गायन के महान गायक पं० राजन मिश्र जी का जन्म 8? अक्तूबर सन् 1951 ई० में हुआ तथा पं० साजन मिश्र जी का जन्म 15 अगस्त 1956 में उत्तरप्रदेश के शहर वाराणसी के कबीरचौरा मोहल्ले में हुआ। पं० राजन मिश्र अपने एक साक्षात्कार में बताते हैं, "जिस दिन मेरा जन्म हुआ, ठीक उस दिन छोटी व दीपावली व श्री हनुमान जयंती भी थी। कबीरचौरा के पुश्तैनी मकान में उनका जन्म हुआ। पं० राजन मिश्र से 9 साल बड़ी उनकी बड़ी बहन इन्दुमती थी।

" पं० राजन-साजन मिश्र का जन्म भारत की सबसे प्राचीनतम नगरी में हुआ। जिसे भारत के उत्तरप्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर कहा जाता है। इसे 'बनारस' और 'काशी' भी कहा जाता है। इसे हिन्दुधर्म के सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक माना जाता है। और इसे अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। लिंग पुराण में अवि का अर्थ पाप है। अवि + मुक्त अर्थात जो पापमुक्त हो अर्थात जहाँ पाप ही न हो जहाँ के प्रभाव से पतितों और ज्ञानहीनों को भी मुक्ति मिल जाए वह स्थान अविमुक्त क्षेत्र होता है। तथा मत्स्य-

[2] www.hi.m. wikipedia. org, [3] etv bharat . com.

पुराण और स्कन्दपुराण में भी अविमुक्त को वाराणसी का ही अन्य नाम बताया गया है।

पंडित राजन- साजन मिश्र बन्धुओं ने भी इसी पावन धरती पर जन्म लिया। महान कलाकारों के बीच पले-बढ़े एवं जन्मे दो भाई राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का शुरू से ही अत्यधिक रुझान संगीत में था। उनकी सुबह ही सारंगी की धुन, मृदंग की थाप तथा तानपुरे की मधुर आवाज़ के बीचों बीच होती थी। जिस कारण से इनका शुरू से ही शास्त्रीय संगीत की तरफ रुझान रहा। अब यदि कबीरचौरा की बात की जाए तो कहते हैं इस मोहल्ले में संगीत जगत के एक-से बढ़कर एक पुरोधाओं ने जन्म लिया, जिन्होंने अपनी तपस्या और संगीत साधना के साथ सुर को साधते हुए बनारस घराने का नाम पुरे विश्व में रोशन किया। कबीरचौरा को पद्मपुरस्कारों वाली गली भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ दो नहीं बल्कि दर्जनों की संख्या में पद्मपुरस्कार पाने वाले कलाकार रहते हैं। इस गली में ऐसे- ऐसे गुरू हुए, जिन्होंने संगीत के प्रशिक्षुओं को इस कदर तराशा कि उन्होंने बनारस को विश्व पटल पर एक अलग मुकाम पर पहुँचा दिया।

1.1.1 पंडित राजन मिश्र एवं पं0 साजन मिश्र का बचपन एवं माता-पिता :“350 साल पुरानी इस पारिवारिक परम्परा को देखते हुए इन दोनों भाईयों के संगीत जगत में बहुत ही सम्मान से देखा जाता है। इनका घराना मुख्यत: बनारस घराने के अन्तर्गत सारंगी घराना है। आपके परिवार में सुप्रतिष्ठित सारंगी वादकों ने सांगीतिक कुल के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी सकुशल भूमिका निभाई है। पंडित राजन मिश्र एवं पं0 साजन मिश्र के पिता का नाम पं0. हनुमान प्रसाद मिश्र था। पं0 हनुमान प्रसाद मिश्र एक महान सारंगी वादक तथा गायक थे। वह भी अपने समय के महान कलाकारों में से एक रहे हैं। पं0 राजन - साजन मिश्र जी की माता जी का नाम गगन किशोरी था। वह नेपाल के एक शाही परिवार से सम्बन्ध रखती थी। पं0. राजन- साजन मिश्र जी के पड़दादा (पितामह) पंडित गणेश मिश्र थे। उनके दादा जी का नाम पंडित सुरसहाय मिश्र था। पं0. हनुमान प्रसाद मिश्र जो कि आपके पिता हैं उन्हें संगीत नाटक अकादमी के पुरस्कार से भी नवाज़ा जा चुका है। पं0 राजन - साजन मिश्र के प्रथम गुरु उनके पिता जी पं0. हनुमान प्रसाद मिश्र और उनके चाचा जी पं0 गोपाल मिश्र तथा बड़े गुरू पं0. बड़े राम दास जी रहे हैं। जिन्हें सब गायनाचार्य पं0. बड़े रामदास जी भी कहते हैं। जब राजन मिश्र 5 साल के थे तब उनका गंडाबन्धन की रस्म पूज्यनीय गायनाचार्य पंडित बड़े राम दास मिश्र जी द्वारा सम्पन्न किया गया। जब तक साजन मिश्र की आयु पाँच साल नहीं हुई तब तक उनके भी गंडाबन्धन नहीं किया गया परिवार की परम्परा को ध्यान में रखते हुए उनका गंडाबन्धन 5 साल की आयु में सम्पन्न हुआ। उनके पिता जी और चाचा जी ने ही

Sansad T.V. 4 years ago, Shakhsiyat with Pandit Rajan and Sajan mish – Youtube

[ ]

संगीत की विधिवत तालीम उन्हें दी। पं० राजन- साजन मिश्र जी की माता जी भी सांगीतिक परिवार से सम्बन्ध रखती थी। इसलिए वह खुद भी संगीत के बारे में अच्छी-खासी जानकारी रखती थी। उन्हें स्वरों की बखूबी परख करनी आती थी। हालांकि पंडित राजन- साजन मिश्र के दादा जी का नाम पं० सुर सहाय मिश्र था परन्तु वह गायनाचार्य पं० बड़े राम दास जी को भी अपने दादा कहकर ही सम्बोधित एवं परिचय देते थे। कहा जाता है पं० राजन- साजन मिश्र बचपन से ही बहुत चुस्त और शरारती स्वभाव के थे। बचपन से ही शरारती एवं चुस्ती भरे स्वभाव के होने के कारण यह cricket, football, badminton, गिल्ली डंडा, पिट्ठु इत्यादि जैसे खेल में खूब माहिर खिलाड़ी थे। इन सबके बावजूद यह दोनों भाई अपने पिता तथा चाचा जी से संगीत शिक्षण प्राप्त करते थे। उनकी दिनचर्या ही ऐसी थी कि उनका रुझान खुद-ब-खुद ही संगीत की तरफ बढ़ गया।

1.1.2 पं० राजन- साजन मिश्र का संगीत की ओर आकर्षण एवं दिनचर्या : पं० राजन- साजन मिश्र के पिता पं० हनुमान प्रसाद मिश्र जी ने उन्हें संगीत विद्या सिखाई। उनके पितामह एवं बड़े गुरु पंडित बड़े राम दास जी मिश्र ने उन्हें सर्वप्रथम शुरुआती संगीत शिक्षा दी। पंडित राजन- साजन मिश्र जी ने अपने एक साक्षात्कार में बताया कि जब राजन जी बहुत छोटे हुआ करते थे उस समय से ही उन्हें संगीत शिक्षा देनी प्रारम्भ हो गई थी। उन्हें उनकी माता गगन किशोरी जी सुबह सवेरे कबीरदास जी के मंदिर के 5 बजे के घण्टे के बजते ही उठा दिया करते थे। उनकी माता जी सुबह सवेरे 5 बजे रामायण का पाठ करती थी जिसे उनकी चाची जी, घर के बड़े-बुजुर्ग, उनकी बहन, पिता जी तथा वह दोनों स्वयं भी सुनते थे तथा आनन्द पाते थे। उनकी दिनचर्या का यह मुख्य भाग था। उनके घर का नियम था कि सुबह 5 - 5:30 बजे उठना ही पड़ता था। और नहाने के बाद रियाज़ करने बिठा दिया जाता था। पहले ईश्वर की भक्ति के तौर पर रामायण का पाठ किया जाता था फिर उसके बाद रियाज़ करवाया जाता था। शुरुआत में उन्हें भैरव राग करवाया गया था। पं० राजन जी अपने साक्षात्कार में बताते हैं कि उनके संगीत शिक्षण के शुरुआती दिनों में उन्हें उनकी माता जी भैरव राग की बंदिशें रटाती थी तथा संगीत शिक्षण में उनकी सहायता करती थी। हालांकि उनके पिता जी और चाचा जी भी उन्हें संगीत की पूर्ण तालीम देते थे। परन्तु भैरव राग कि यह बन्दिशें "मोहन जागौं और भईलवा, अब काहे को नैना अलसिलवा" सुबह वह अवश्य खुद भी गाती थी तथा इन्हें भी रटाती थी। उनकी माता जी खुद भी बहुत सुरीला गाती थी। इस प्रकार उनकी सुबह (प्रातः) होती थी। फिर सात - साढ़े सात बजे वह स्कूल चले जाते थे तो जाने से पहले दो घण्टे का रियाज़ किया करते थे।

newspaper - The Hindu, Jan 31, 2019, updated Feb 02, 2019 → Rajan/Sajan Mishra : The brothers from Banaras

वंश वृक्ष

श्री रामबख्श मिश्र

श्री बड़े गणेश मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र)

श्री शीतल मिश्र (कनिष्ठ पुत्र)

श्री काशी मिश्र (प्रथम पत्नी से)

श्री गौरीशंकर मिश्र (द्वितीय पत्नी से)

श्री हरिशंकर मिश्र (कनिष्ठ पुत्र)

मनमन मिश्र
रामभक्त, गायक,
अविवाहित (1969)
(अकाल मृत्यु)

श्री सुरसहाय मिश्र

पंडित हनुमान प्रसाद मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र)

पंडित गोपाल मिश्र (कनिष्ठ पुत्र)
(निः सन्तान)

पंडित राजन मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र)

पंडित साजन मिश्र (कनिष्ठ पुत्र)

स्वरांश मिश्र

रितेश मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र)

रजनीश मिश्र (कनिष्ठ पुत्र)

Room sample.com

[ ]

1.1.3 पं. राजन-साजन मिश्र की प्राथमिक शिक्षा :- पं. राजन-साजन मिश्र जी नित्य-नियम के तौर पर शुरुआती दिनों में साढ़े पाँच से साढ़े छः बजे तक रियाज़ करते थे। शुरुआती दिनों से लेकर अबतक वह नित्य-नियम के तौर पर अलंकार का रियाज़ करते थे। सब सुरों की साधना किया करते थे। जैसे-जैसे उनके पिता जी बताते थे उस प्रकार वह रियाज़ करते थे। फिर उसके बाद वह स्कूल चले जाते थे। रियाज़ के बाद वह खाना-खाकर थोड़ी देर आराम करके स्कूल चले जाते थे। उनके स्कूल का समय 7:30 बजे का था। उनके स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ अलग-अलग activities होती थी वह उनमें भी भाग लेते थे। वह संगीत के साथ-साथ खेलकूद में भी माहिर थे तो वह बताते हैं कि एक घण्टे का उनका P.T. Period भी होता था। वह उस Period का सुबह से इंतजार किया करते थे। जब P.T. Period होता था तो वह जमके खेलकूद करते थे। सभी Teachers (अध्यापकगण) जानते थे कि वह सांगीतिक परिवार से संबंध रखते थे तो वह उनसे प्रेमपूर्वक पेश आते थे।

पं. राजन मिश्र अपने एक साक्षात्कार में बताते हैं कि उनके पिता जी का रियाज़ बड़ी सख्ती से होता था जो उनके पिता रियाज़ के दौरान उन्हें डाँट दिया करते थे। एक बड़ा रोचक किस्सा है जो पं. राजन जी ने अपने साक्षात्कार में प्रस्तुत किया यह किस्सा उनके रियाज़ तथा संगीत विद्या पर असर डालता है तो बात यह है कि एक बार पं. राजन-साजन मिश्र के पिता जी ने रियाज़ के वक्त पूछ लिया कि बेटा आज पूरे दिन में कितनी बार खाया है और क्या क्या खाया है तो वह अपने पिता जी को पूरे दिन में जो कुछ भी खाया होता है वह उन्हे गिना देते हैं जैसे दाल-चावल, रोटी, हलवा-पूरी इत्यादि। तो यह सब सुनकर पिता जी बोले "अच्छा-चार बार खाए हो और रियाज़ कितनी बार कर चुके हो तो उन्हें वह बताते हैं कि पिता जी दो बार रियाज़ किया है। यह सुनने के बाद तो पिता जी गुस्से में डाँटते हुए बोलते हैं कि "शर्म नहीं आती चार बार खाना खाया और सिर्फ दो बार ही रियाज़ किया। उस दिन के बाद वह बताते हैं कि उनका रियाज़ 4 बार का तो नहीं हो सका क्योंकि वह स्कूल जाते थे और वहाँ का पाठ भी करते थे। तो वह उस दिन के बाद दिन में तीन बार रियाज़ किया करते थे।

1.1.4 रियाज़ विधि :- सुबह उनका रियाज़ 2 से ढाई (2:30) घण्टे का होने लगा। और फिर स्कूल से आने के बाद 2 से 5 बजे का तीन घण्टे का रियाज़ होता था। फिर शाम को वह मैदान में और बच्चों संग खेलने चले जाते थे। उस के बाद खेलकूद करके जब वह घर वापिस लौटते थे तो उनके पिता जी फिर

Youtube - Sansad TV, Shakshiyat Prog. - 27:29, 9 year ago ; Raaggiri interview Part-2 2 month ago - Padmabhushan Pandit Sajan Mishra Exclusive Interview part 1, 2 Raagiri

3 घण्टे का और रियाज़ करवाते थे। वह पाठ के अनुसार रियाज़ करते थे। और उनके पिता जी बोलते भी थे कि रियाज़ हमेशा पाठ के रूप में ही करना चाहिए। लगातार गाने से संगीत में ऐकाकीपन (Monotony) आ जाता है। और आदमी के मस्तिष्क का कार्य जो Creativity या Fineness का कार्य करता है वो ग्रन्थियाँ भी block (बंद) होने लगती हैं इसलिए थोड़ा अवश्य अन्तराल (Duration Gap) होना चाहिए और शरीर की क्षमता के साथ ही कार्य करना चाहिए। तो उनके पिता जी बड़े व्यावहारिक व्यक्ति थे वह बड़ी सूझ-बूझ के साथ ही कार्य करते थे। उनके पिता जी घर के मुखिया थे। उनके चाचा जी भी दोनों मिश्र बन्धुओं को सांगीतिक तालीम देते थे। वह मिश्र बन्धुओं से बहुत प्रेम करते थे। उन्हें बहुत सम्बोधित करते थे, उनका उत्साह बढ़ाते थे। इनके खेलकूद की सब जरूरतें इनके चाचा जी पूरी करते थे। चाचा जी पं० गोपाल मिश्र कहते थे कि "जब तक मिट्टी में नहीं जाओगे तब तक वह मजबूती नहीं आएगी" वह कहते थे कि "संगीत एक तरफ है तथा खेलकूद एक तरफ है, हरेक प्रकार का कार्य करो परन्तु संगीत के साथ" और एक तरह से देखा जाए तो यह भी अच्छा कार्य ही है शरीर का खेलकूद से परिश्रम होता है परिश्रम, व्यायाम संगीत के लिए अतिउपयोगी है।

1.2 संगीत परम्परा :- इनका घराना विशेष तौर पर बनारस घराने के अन्तर्गत सारंगी घराना है। और कहा जाता है Pandit राम बख्श मिश्र जी जो इनके पड़दादा के भी दादा थे उससे यह परम्परा दिखती है। निश्चित रूप से उससे पहले भी यही होगी। लेकिन पं० राम बख्श मिश्र जी के बेटे गणेश मिश्र, शीतल मिश्र जी; गणेश मिश्र जी के बेटे हुए पं० राजन-साजन मिश्र के दादा जी सुर सहाय मिश्र और पं. सुर सहाय मिश्र के बेटे हुए हनुमान प्रसाद और पं. गोपाल मिश्र इनके ही दो बेटे पं० राजन-साजन मिश्र आगे इस परम्परा को आगे बढ़ाते आ रहे हैं और उसी प्रकार यह आगे बढ़ते रहेंगे। आज के समय में पं० राजन-साजन मिश्र के बेटे रितेश मिश्र, रजनीश मिश्र और स्वरांश मिश्र भी अब तैयार गवैया बन चुके हैं। पं० साजन मिश्र जी अपने 5 साल बड़े भाई पं० राजन मिश्र जी को गुरुतुल्य मानते थे। वह उनकी बताई हर बात बखूबी समझते थे। इस प्रकार यह पारिवारिक परम्परा चली आ रही है। यह बात आवश्यक थी कि उनके बड़े-बुजुर्ग सारंगी बजाते थे परन्तु वही व्यक्ति सारंगी वाद्य बजा सकता है जिसे संगीत का ज्ञान हो। इसलिए जब गायन की तालीम खत्म हो जाती थी फिर उसके बाद ही उन्हें सारंगी साज़ पकड़ा दिया जाता था। बचपन में पिता जी जब सारंगी हाथ में दे देते थे तो कहते थे कि तीन घण्टा गायन प्रक्रिया करने के बाद ही एक घण्टा सारंगी बजानी है। और

गायन की तालीम इतनी पुख्ता हुआ करती थी क्योंकि सारंगी जो है हर घरानेदार के साथ वह बजाते थे चाहे वह किराना घराना, आगरा घराना, चाहे वह बनारस घराना हो, जयपुर घराना हो, चाहे अत्रोली हो तो इस प्रकार हर घराने के गायन ढंग, उनकी खूबसूरत चीजें वो सब खुद-ब-खुद उनके अन्दर सम्माहित होती रहती थी। इन सबका लाभ इनके सारंगी घराने को बहुत मिला। इस प्रकार उन्हें अलग-अलग जगहों से कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता रहा। वह अपने एक साक्षात्कार में बताते हैं कि वह अपने पिता के गायन से बहुत दहशत खाते थे। उनके पिता जी एक तैयार गवैया थे, वह अपने बुढ़ापे में भी उनकी उन तानों के पकड़ नहीं पाते थे। उनका गला कुदरती कुछ ऐसा तैयार था कि वह जब चाहे जहाँ से चाहे वह तार पंचम, धैवत, फिर अति तार सप्तक को छूकर वापिस आ जाते थे। तो वह उन्हें कुदरत द्वारा प्रदान की गई एक बहुत बड़ी देन थी। पं० राजन-साजन मिश्र जी कहते हैं कि वह आजतक जो भी बन पाए हैं, जैसे खुले माहौल में रहे हैं वह उनके परिवार की बदौलत ही है। और हमेशा उन्हें उनके पिता जी, चाचा जी तथा पूरा परिवार उन्हें खुले विचारों का बनाने में प्रयास कर रहा है।

"पिता जी से तो मिश्र बन्धुओं ने संगीत शिक्षा ली परन्तु वह बताते हैं कि उनसे भी ज्यादा तालीम उन्हें घर के बजाये स्टेज (मंच) पर ज्यादा प्राप्त हुई है और उसका कारण यह था कि पिता जी बड़े भैया को जब सिखा रहे होते थे तो बीच में जब साजन जी प्रवेश करते थे तो वह बोलते थे कि पहले तुम बड़े भाई को सुनो, समझो और उस पर ध्यान लगाओ उसी प्रक्रिया के तहत अभी तक हमारी शिक्षा चल रही है और चलती रहेगी।"

अतः कुशल संगीत शिक्षा, पारिवारिक संगीतमय वातावरण, विद्यालयी प्रशिक्षण, तथा ख्याल एवं टप्पा अंग की गायकी की नियमित साधना से आप दोनों का सांगीतिक मार्ग प्रशस्त हुआ और तभी से गायकी का बीज प्रस्फुटित हुआ। तालीम के साथ-साथ लगभग 11 वर्ष की आयु से प०. राजन-साजन मिश्र ने अपनी मंच प्रस्तुतियां मंदिरों में आयोजित होने वाले समारोह में प्रारम्भ कर दी। और आजतक वह अपनी अद्भुत प्रस्तुतियां देते आ रहे हैं।

1.3 प०. राजन-साजन मिश्र का कलाकार के रूप में मंच प्रदर्शन :- प०. राजन-साजन मिश्र की पारिवारिक परम्परा के अनुसार संगीत की सारी तालीम पिता जी प०. हनुमान मिश्र तथा चाचा जी पं०. गोपाल मिश्र के अन्तर्गत रहते हुए प्राप्त हुई। बचपन में जब ज्येष्ठ पुत्र प०. राजन मिश्र जी की

सचि उनके पिता जी को सारंगी के बजाए गायन के प्रति अग्रसर दिखी तब पिता ने गायन की तालीम देनी आरम्भ कर दी। फिर पं० राजन मिश्र 5 साल के हुए तो उनका गंडाबन्धन गायनाचार्य पं० बड़े राम दास मिश्र जी द्वारा रस्म सम्पन्न की गई। पं० साजन मिश्र तब बहुत छोटे थे उनका राजन मिश्र से 5 सालों का अन्तर है। जब कि साजन मिश्र भी 5 साल के हुए तब उनका गंडाबन्धन भी बड़े गुरु गायनाचार्य पंडित बड़े रामदास जी द्वारा बांधा गया।

जब साजन मिश्र लगभग 11 वर्ष के हुए तब से दोनों भ्राताओं ने मंच-प्रस्तुति देना आरम्भ कर दिया। पहले उन्होंने मंदिरों में आयोजित होने वाले समारोह में भाग लिया। अपनी सर्वप्रथम मंच प्रस्तुति इन्होंने युगल बन्धुओं के तौर पर संकट मोचन मंदिर जो कि वाराणसी में स्थित है वहाँ सौंदर्या-त्मक प्रस्तुतिकरण दिया था। वह बताते हैं कि सन् 1967 में संकट मोचन संगीत समारोह जो बनारस के बहुत ही प्रसिद्ध मन्दिर में आयोजित हुआ था वहाँ उन्होंने अपनी प्रथम मंच प्रस्तुति दी थी। उस दिन के बाद उन्होंने युगलबन्धुओं के तौर पर ही मंच प्रस्तुतियां दी। 11 से लेकर 17 वर्ष की आयु तक बनारस के मंदिरों में साजन मिश्र जी ने बड़े भाई राजन जी संग मंच प्रस्तुतियां दी। इनकी पहली विदेशी यात्रा जो संगीत समारोह के लिए हुई थी वह श्रीलंका में 1978 प्रस्तुतिकरण किया था। उसमें 10 लाख के करीब श्रोताओं के सामने दोनों मिश्र बन्धुओं ने गाया। वह बताते हैं कि पहले तो वह दोनों बहुत घबरा गए थे फिर उन्होंने बेहद आत्मविश्वास से सारा प्रदर्शन किया। वहाँ श्रीलंका में M.S. Aman Devan से उन्होंने सिंगली गाना भी सीखा। उन्होंने पहली बार भी सतगुरु जगजीत सिंह जी को भी अपना गायन प्रस्तुत किया तो सतगुरु ने उनके हुनर को पहचाना और उन्हें उनको जो वह कारखाने के कार्य करते थे उसकी कमाई के बदले नौकरी छोड़ने तथा अधिक रियाज़ करने का निर्देश दिया। दोनों मिश्र बन्धुओं ने सतगुरु के आदेश को श्रद्धापूर्वक मानते हुए संगीत की ओर कदम बढ़ा लिया। श्रेणी साहिब में श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी द्वारा आयोजित विभिन्न समारोह में आप दोनों भाइयों ने प्रस्तुतिकरण किया जो निम्नलिखित हैं।

1) सतगुरु प्रताप सिंह स्मृती संगीत सम्मेलन जो दिल्ली में 9, 10, 11 अप्रैल 1977 में आयोजित किया गया। उसमें पं० राजन-साजन मिश्र ने 11 अप्रैल को कला प्रस्तुती दी।

[ ]

2. पांचवा श्री सतगुरु प्रताप सिंह संगीत सम्मेलन बम्बई में 8 अप्रैल 1977 को हुआ उसमें मिश्र बन्धुओं ने युगल गायन किया। तथा इनके साथ तबले पर साबरी खां ने संगत की।

3. छटा श्री सतगुरु प्रताप सिंह संगीत सम्मेलन जो लखनऊ में 2 से 6 फरवरी 1979 को आयोजित हुआ उसमें 3 फरवरी को मिश्र बन्धुओं ने अपना कला प्रदर्शन किया। उसमें तबले पर श्री गोपाल बोपाराय, हारमोनियम पर भिटन लाल तथा सारंगी पर श्री इन्दुलाल ने संगती की।

इसी प्रकार सांतवा प्रोग्राम 16 दिसम्बर 1980 को औरंगाबाद में, 10 अगस्त 1988 को भैनी साहिब में, 23 फरवरी 1994 में, 28 जनवरी 1995 में जालन्धर में, 15 अगस्त 1999 में जो दिल्ली में प्रस्तुत हुआ उसमें अपने कला प्रदर्शन से सबको रसबद्ध कर दिया।

इन सब प्रस्तुतिकरणों के उपरान्त दोनों भाइयों ने विदेशों में भी अपना जलवा दिखाया उन्होंने जर्मनी, फ्रांस, स्विटजरलैंड, ऑस्ट्रिया अमेरिका, ब्रिटेन, नीदरलैंड, यूएसएस आर, सिंगापुर, कतर, बांग्लादेश और दुनिया भर के देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

उन्होंने और भी बहुत से संगीत सम्मेलनों में भाग लिया जैसे हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन, बसंत बहार कार्यक्रम, इण्डिया नेशनल फैस्टिवल, 48 वां तानसेन समारोह, नैशनल राजस्थानी संगीत समारोह, भारत रत्न पं० भीमसेन जोशी म्युजिक फैस्टिवल, सप्तक 2015 अहमदाबाद, सुर फेस्टिवल उत्सव 2016 कोलकाता, संकट मोचन संगीत समारोह 15 से 20 अप्रैल 2017, संकट मोचन मंदिर वाराणसी, इत्यादि। प० राजन साजन मिश्र के संगीत सम्मेलनों की गिनती अपार है।

1.4 गृहस्थ जीवन के रूप में ÷ प० राजन मिश्र का विवाह सन 1969 में बीना मिश्र और प० साजन मिश्र का विवाह सन 1977 में कविता मिश्र के साथ हुआ। पंडित साजन मिश्र जी की पत्नी महान नृत्यकार पंडित बिरजू महाराज जी की पुत्री है, परन्तु पर्दा प्रथा की

[ ]

वजह से वह नृत्य को अपना नहीं सकी। संस्कारों को अपनाते हुए यह घराना संयुक्त परिवार में रहता था इसे ही आगे बढ़ाने का कार्य दोनों मिश्र बन्धु करते आ रहे हैं। पं० राजन-साजन मिश्र बताते हैं कि वह अपने परिवार का खूब ख्याल रखते हैं। वह अपने घर में बहुत शांति से तथा सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं। यह सब उनके संस्कारों में ही डाला गया है। वह बताते हैं कि उनको शुरू से शिक्षा के रूप में प्रेम करना ही सिखाया है। आगे भी वह अपनी-अपनी पत्नीयों को यह शिक्षा देते हैं। आजतक यह परिवार इसीलिए सुखमय तथा संयुक्त परिवार का पूर्णतः आनन्द पा रहा है। वह यह भी बताते हैं कि जब हम फ्री होते हैं तो दो चार दिन के लिए परिवार के मनोरंजन के लिए बाहर भी चले जाते हैं जैसे रेस्तरां में जाना, फिल्म देखनी, बाहर घूमने जाना इत्यादि। "वह बताते हैं हालांकि हम संयुक्त परिवार में रहते हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इसमें किसी भी व्यक्ति पर कोई पाबंदी है या जोर-जबरदस्ती है किसी कार्य को लेकर, हम सब प्रेम भाव से रहते हैं परन्तु साथ ही में हम सब सबकी स्वतंत्रता पर भी ध्यान देते हैं, किसी व्यक्ति को किसी भी चीज़ की मनाही नहीं है बस वह झगड़ा न हो।"

पं० राजन मिश्र के दो बेटे हैं रितेश एवं रजनीश मिश्र तथा पं० साजन मिश्र के एक बेटा है स्वरांश मिश्र। पं० राजन-साजन मिश्र बताते हैं कि उन्हें अपने बेटों पर बोहोत नाज़ है वह आज भी इस परम्परा को बढ़ाने में आगे आए। अब आगे वह अपने बच्चों से भी यही आशा रखते हैं। पं० राजन एवं साजन मिश्र की अथक मेहनत और शिक्षा ने दो बेहतरीन कलाकार सींचे हैं - रितेश मिश्रा और रजनीश मिश्रा जो उनकी भविष्य की पीढ़ी के रूप में उनकी परम्परा की छठीं पीढ़ी की नुमाईंदगी कर रहे हैं। वह कहते हैं कि हमारा सपना है कि बनारस घराने की यह परम्परा ऐसे ही चलती रहे। हमें योग्य विद्यार्थीयों की तलाश रहती है जो हमारी इस परम्परा को सदा के लिए अमर कर दे। लोग संगीत को जन मनोरंजन समझते हैं परन्तु हम चाहते हैं कि संगीत मनोरंजन के साथ-साथ आध्यात्मिकता का भी एक माध्यम बने।

1.5 पं० राजन - साजन मिश्र की सांगीतिक उपाधियां : पं० राजन - साजन मिश्र जी को अनेकों पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया है।

www.wikipedia.com, AIR Raagam 11:00, Dishmonk ⊙ - youtube, [8:22]

जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

- आपने 1973 में आकाशवाणी के लिए आवेदन किया, और आप दोनों को आकाशवाणी से 1975 में 'ए' ग्रेड का सम्मान दिलीप चन्द्र वेदी, सुमिति मुटाटकर, जवाहर लाल मट्टू, माधुरी मट्टू एवं भाई जी द्वारा प्राप्त हुआ। उस समय सेन साहब डायरेक्टर जनरल हुआ करते थे। उस समय राजन मिश्र 22 साल के थे और साजन मिश्र 17 साल के थे। इस प्रोग्राम के बाद 1984 में आप दोनों को आकाशवाणी द्वारा टॉप रैंक प्राप्त हुआ।

- 1979 में प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई द्वारा आपको संस्कृति पुरस्कार प्राप्त हुआ।

- 1994 - 1995 में गांधर्व राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

- 1998 में आपको संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला।
- 2011 में पंडित चतुर लाल एक्सिलेंस सम्मान।
- 16 अप्रैल 2007 में राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा पद्मभूषण से आपको सम्मानित किया गया।
- 85वीं जयंती पर 2011 में स्मृतियां नाम से पं० चतुरलाल एक्सीलेंस अवार्ड प्राप्त किया।
- आपको 14 Dec 2012 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा तानसेन पुरस्कार से नवाज़ा गया।

- 2013 में ताना-रीरी संगीत सम्मान अवार्ड आप दोनों मिश्र बन्धुओं को गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्राप्त हुआ, जो अब 2014 से अब तक भारत के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे आ रहे हैं।

- 2014 - 2015 में आपको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आपको तानसेन पुरस्कार मिला।

- फिर आपको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संगीत भूषण और काशी

youtube Shadaj Baithak - 2018, 1 year ago, Pandit Rajan Sajan Mishra | Music appreciation session, ...

गौरव पुरस्कार से नवाज़ा गया।

[ ]

- पं. राजन- साजन मिश्र ने संगीत जगत में और भी कई अवार्ड्स जीते हैं जैसे ओमकारनाथ ठाकुर द्वारा मसूर दीनानाथ, श्रीमति लतामंगेशकर आदि से आपने बहुत सम्मान प्राप्त किया।

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बनारस के विश्व विख्यात प्रतिनिधि तथा वर्तमान समय के सुप्रतिष्ठित युगल गायक पं० राजन मिश्र एवं साजन मिश्र अपने गायन की बन्दिशों के समृद्ध भण्डार एवं अपनी अद्भुत कला प्रदर्शनी के माध्यम से आधुनिक युग के महान कलाकारों में से एक हैं। उनके संगीत का श्रवण हमेशा से ही कर्णप्रिय तथा सुखमय रहा है। जितना ही उनका संगीत मंत्रमुग्ध कर देने वाला है उतनी ही उनकी बातें भी हैं। कई बार तो यूँ महसूस होता है कि जैसे वे किसी राग के एक-एक स्वर समूह के साथ खेलते हुए उसका क्रमबद्ध विकास कर रहे हैं।

- मृत्यु[7,4]:- हाल ही में पीछले साल पं० राजन मिश्र जी का कोरोना महामारी के कारण 25 अप्रैल 2021 को रविवार के दिन निधन हो गया। उन्हें दिल्ली के अस्पताल में हृदय समस्या के कारण भर्ती कराया गया था। उन्होंने 70 वर्ष की आयु में दिल्ली के एक अस्पताल में अंतिम सांस ली। बनारस घराने से जुड़े मिश्र जी का जाना कला और संगीत जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

7 www. wikipedia. Com.

दूसरा अध्याय

शोध प्रविधि

किसी भी शोध कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए किसी विशेष शोध विधि का प्रयोग किया जाता है। सही शोध विधि ही शोध कार्य को लक्ष्य तक पहुँचाने में मददगार साबित होती है। शोधकर्ता के अनुकूल ही विशेष विधि का प्रयोग करके सम्बन्धित सामग्री को एकत्रित करके शोध कार्य को सम्पूर्णता प्रदान की जाती है।

2.1 समस्या कथन :- ख्याल गायकी के युगल गायक पं० राजन मिश्र एवं साजन मिश्र का भारतीय संगीत को योगदान।

2.2 अध्ययन का उद्देश्य :- मेरी इस लघु प्रयोजना का उद्देश्य वर्तमान युग के सिद्ध युगल गायक पं० राजन-साजन मिश्र के जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना है। इस नाते उनकी साधना के बारे में जानने का मौका मिलेगा जो हम सब विद्यार्थियों को और पाठकों को रियाज़ से जुड़ने की प्रेरणा देगा।

2.3 अध्ययन का महत्व :- प्रस्तुत लघु प्रयोजना के अध्ययन का महत्व यही है कि बहुत सारी जानकारी उभरकर सामने आयेगी। उनकी गायकी के बारे में, उनके पारिवारिक परिवेश के बारे में, उन्होंने बहु विविध क्षेत्रों के लिए गाया उन्होंने जहाँ एक तरफ ख्याल गायकी गाई दूसरी तरफ भक्ति संगीत की रचनाएं गाई फिल्म संगीत में भी गाया तो उनके बहु आयामी व्यक्तित्व को उजागर करने के लिए इस अध्ययन में सामग्री जुटाई जा रही है। यही इसके अध्ययन का महत्व है।

2.4 शोध विधि :- विभिन्न प्रकार के शोध कार्यों में विभिन्न प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु इस लघु प्रयोजना से संबंधित तथ्य संग्रह के लिए व्याख्यात्मक तथा ऐतिहासिक

[ ]

विधियों का प्रयोग किया गया है।

2.5 दत्त स्त्रोत :- दत्त संग्रह विधि में जीवन वृतांत अध्ययन और सर्वेक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। दत्त संग्रह कार्य के लिए मुख्यतः साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इस शोध कार्य के दौरान प्रथम और द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्रथम स्त्रोत अध्यापक से परिचर्चा और द्वितीय स्त्रोत किताबें, पत्र- पत्रिकाएँ, Internet sources, Audio / Video, C.D. / Albums इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

2.6 शोध का सीमांकन :- किसी भी शोध कार्य को सीमांकित करना जरूरी होता है ताकि केन्द्रित होकर तथा दिए गए समय के बीच कार्य किया जा सके। इनके सांगीतिक कार्यक्रमों एवं व्याख्यानों की जो सूचना इन्टरनेट पर उपलब्ध है उन्हीं सूचनाओं को गहराई से जांचा परखा गया है। तथा वस्तुनिष्ठता से तथ्यों का निरूपण किया गया है। मैंने इस लघु प्रयोजना के माध्यम से 25 Pages की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उनके जीवन से संबंधित अलग-अलग पहलुओं को संजोने का प्रयास किया है जो कि समय रहते सम्पन्न हो सके।

तृतीय अध्याय

पं०. राजन एवं साजन मिश्र का भारतीय कला क्षेत्र में बहुआयामी योगदान

" शास्त्रीय संगीत, संगीत की वह देन है जिससे आत्मा से परमात्मा तक का मिलन तथा मन की शान्ति का आभास होता है। संगीत के जरिए मनुष्य परम शान्ति को प्राप्त होता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए संगीत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। योग साधना की गति से भी तेज़ गति संगीत की है। संगीत उस केन्द्र का कार्य करता है जिससे आसपास की उर्जा शक्ति बढ़ जाती है और आस-पास का वातावरण प्रफुल्लित हो उठता है। यही उर्जा शक्ति मनुष्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। हमारी भारतीय संस्कृति एवं कला में संगीत को उच्चतम स्थान प्राप्त है। यही संगीत मनुष्य को अध्यात्म से जोड़ता है तथा संगीत को शक्ति प्रदान करता है। "

किसी भी संगीतज्ञ की गायन अथवा वादन शैली का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना एक बड़ा ही दुरूह कार्य है। इसके लिए कलाकार के संगीत में सृजनशीलता, विषयज्ञान, बंदिश प्रस्तुति आदि के अध्ययन से परे होकर विधिपूर्वक इसे करना होता है। आचार्य बृहस्पति के शब्दों में " किसी भी कलाकार को सुनकर केवल यह कह देना कि वह अच्छा है या बुरा है पर्याप्त नहीं है। कला व हुनर ईश्वर द्वारा दी गई देन है। जब कोई हुनरबाज़ कलाकार अपने हुनर से जनसमूह को प्रभावित करता है तब जाकर उसे कलाकार की संज्ञा दी जाती है। कलाकार केवल प्रस्तुति ही नहीं देता बल्कि वह अपने सम्पूर्ण जीवन में क्या सीख पाया वह क्या बताना चाहता है किस प्रकार का वह कार्य कर रहा है वह अपनी कला के माध्यम से व्यक्त करता है। इसीलिए वह एक कलाकार कहलाता है।

3.1 पंडित राजन एवं पंडित साजन मिश्र के कला प्रदर्शनों का विस्तृत विवरण :- मिश्र बन्धुओं ने सांगीतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला मात्र 5 वर्ष की आयु से ही आरम्भ कर दी थी। सात-आठ वर्ष की आयु में ही अपने गुरू जी के सानिध्य में बनारस के

" dtv. bharat. com", youtube Uaday Baithak 2018" - 1year ago (1:30:39)min

मंदिरों में कार्यक्रम देना आरम्भ कर दिया था। 1967 में संकटमोचन हनुमान मंदिर में आपका पहला कार्यक्रम हुआ, वह कार्यक्रम में काफी हजारों की संख्या में श्रोता प्रस्तुत हुए थे। उस समय आप दोनों की उम्र क्रमशः 11 वर्ष और 16 वर्ष की थी। इस कार्यक्रम में बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के कुछ विद्वान आलोचक, डॉ लालमणि मिश्र जी, डॉ राजमान सिंह जी, डॉ के.सी. गंगाडे जी, आए हुए थे। इसके अतिरिक्त बनारस के बड़े-बड़े संगीतकार जैसे- पंडित हरिशंकर मिश्र जी, पंडित किशन महाराज जी, पंडित सामता प्रसाद जी आदि भी वहाँ उपस्थित थे। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और आप दोनों को सभी का आशिर्वाद भी प्राप्त हुआ। सन् 1969 में International Festival performance Ustad Ali Akbar Khan) नाम के कार्यक्रम में जब आप दोनों ने अपनी मंत्रमोहक कला की प्रस्तुति दी, जिसमें तबले पर आपका साथ पंडित किशन महाराज जी ने दिया था। पंडित राजन-साजन मिश्र ने कलाकारों के रूप में देश के अतिरिक्त सम्पूर्ण विश्व में ख्याति एवं सम्मान अर्जित किया जिसमें सबसे पहला कार्यक्रम आपका श्रीलंका में हुआ, जो कि आस्था की ओर से प्रथम कार्यक्रम था। उसके उपरान्त वे नेपाल गए। 1985-86 में अमेरिका में अपने Music For World Peace के लिए सांगीतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में आपके साथ 300 कलाकारों का समूह था, जिनके साथ आपने अमेरिका के 50 शहरों में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस पश्चात 18 कार्यक्रम अमीर खुसरो संस्था के लिए भी प्रस्तुतियां दी, जो कि 4 महीनों तक चलीं। आपने अमेरिका की यात्रा के साथ-साथ कनाडा, इटली, लन्दन, बेल्जियम, रूस और सम्पूर्ण यूरोप की यात्रा भी की। वर्ष 2016 में आपने दुबई में भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

3.2 पार्श्व गायकों के रूप में एक फिल्म 1981-82 में 'सुर संगम' आई थी, उसमें प्रसिद्ध संगीत निर्देशक लक्ष्मीकांत प्यारे लाल का संगीत था, उनके फोन आने पर ही उनसे आपका सम्पर्क हुआ था। तो उस फिल्म में आपने दस गाने गाए थे।

उसमें लतामंगेशकर, कविता कृष्णमूर्ती, अनुराधा पौड़वाल जी के साथ गाने का आप दोनों को सुअवसर प्राप्त हुआ। वह गाने बहुत विख्यात हुए, लेकिन उसके पश्चात कोई भी निर्माता उस तरह की फिल्म जो संगीत पर आधारित हो या संगीतकार के चरित्र पर आधारित हो, वैसी फिल्म बनाने का जोखिम नहीं लेते थे। इस के बाद एक फिल्म 'माटी' नाम से थी उसमें संगीत दिया। उस फिल्म में सोनू निगम, अलका याग्निक ने भी गाया है और बड़ा अच्छा संगीत बना, कहानी भी अच्छी थी, लेकिन दुर्भाग्य - पूर्ण निर्माता और निर्देशक के आपसी तालमेल बिगड़ने की वजह से वह फिल्म बाज़ार में नहीं आ पाई। आजकल के समय में थोड़ा सा बदलाव आ गया है। हर वस्तु का व्यवसायीकरण हो गया है। अच्छी और ज्ञानवर्धक फिल्में कम आती हैं।" पंडित जी के लक्ष्मीकांत प्यारे लाल जी के साथ अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। उनकी फिल्म 'वो तेरा नाम था' में उनके दो गाने भी रिकार्ड हुए थे।

ख्याल गायन शैली के प्रचारकों के रूप में पंडित राजन मिश्र एवं पंडित साजन मिश्र जी ने बनारस की ख्याल गायन परम्परा का देश और विदेश में भी प्रचार किया है। विदेशी राष्ट्रों में यू.एस.ए. सम्पूर्ण यूरोप, श्रीलंका, सोवियत रूस, इंगलैंड, नेपाल, सिंगापुर, दुबई, दोहा, कतर आदि देश शामिल हैं और भारत में उन्होंने लगभग सभी राज्यों में भ्रमण किया है जिसमें विशेष स्थान है - पुना, दिल्ली, आन्ध्र प्रदेश, नाड़ा, भुवनेश्वर, मंगलोर, अहमदाबाद, हैदराबाद, शिमला, बंगाल, पंजाब, वाराणसी, भोपाल, जयपुर एवं कोलकाता।

उनके देश और विदेशों में आयोजित कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार है :-

- इंडिया नेशनल फेस्टिवल 1984
- बसंत बहार कार्यक्रम 1988 कैलीफोर्निया
- बसंत बहार कार्यक्रम 1995 फ्रेमोन्ट कैलिफोर्निया

- बसंत बहार कार्यक्रम 1995 फ्रेमौन्ट कैलिफोर्निया
- सवाई गंधर्व 1988 पूना
- श्री राम शंकर लाल म्युजिक फेस्टिवल 2008 दिल्ली
- रागमाला 15 सितम्बर 2008 कैन हॉल विश्वविद्यालय वाशिंगटन
- सी.पी.सी.सी. सेन्ट्रल कैम्पस 06 सितम्बर 2008 नोर्थ कैरोलीना
- अन्तरनाद आर्ट ऑफ लिविंग 12 जनवरी 2010 पूना
- श्री सत्य साईं बुकस एण्ड पब्लिकेशन ट्रस्ट 2011 आन्ध्र प्रदेश
- ऐमीटी बिजिनस स्कूल जनवरी 2012 नोएडा
- राम किशन मिशन - क्लासिकल वोकल कान्सर्ट सितम्बर 2012 दिल्ली
- 88 वां तानसेन समारोह 2012 ग्वालियर
- इन्टरनेश्नल फेस्टिवल | सिम्पोसियम सन्सक्रत आर्ट 2012 दिल्ली
- नेशनल राजरानी म्यूजिक फेस्टिवल 2012 टूरिज़्म एंड कल्चर डिपार्टमेंट राजरानी टेम्पल भुवनेश्वर,
- जुगलबंदी 25 जून 2013 दुबई (Dubai)
- तक्षशिला उत्सव 18 अक्तूबर 2013 कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट पटना
- वर्षा विभाग जुलाई 2013 रविन्द्र कला भवन मंगलोर
- संकट मोचन मंदिर 2013 वाराणसी
- भारत रत्न प०. भीमसेन जोशी म्युजिक फेस्टिवल 2013 हैदराबाद
- शिमला क्लासिकल म्युजिक फेस्टिवल सितम्बर 2014 शिमला
- बंगाल क्लासिकल म्युजिक फेस्टिवल 27 नवम्बर 2 दिसम्बर 2014 आर्मी स्टेडियम ढाका, बांगलादेश
- श्री राम शंकर लाल म्युजिक फेस्टिवल 2014 दिल्ली
- बैठक वर्ल्डवाइल्ड फण्ड 2014
- उत्तरपारा संगीत चक्र 58 वां वार्षिक म्युजिक कान्फ्रेन्स, 2014 हुगली
- स्पीक मैके पी. ई. एस. आई. टी 2014 बैंगलुरु, सप्तक 2014, अहमदाबाद
- सप्तक 2015 अहमदाबाद
- उत्तर प्रदेश महोत्सव 13 जुलाई 2015 भारत भवन, भोपाल
- सुर फेस्टिवल उत्सव 2015 कोलकाता

[ ]

- सुरांजली फाउंडेशन 2015 हैदराबाद
- दिल्ली क्लासिकल म्यूजिक फेस्टिवल 2015 दिल्ली
- दिल्ली स्पीक मैके 2015 दिल्ली
- म्युजिकल लैंड्सी वोकल रिसाइटल दिसम्बर 2015
- नेशनल चैनाल स्टे ऑडीटोरियम दिल्ली
- जवाहर कला केन्द्र 2016 जयपुर
- सप्तक 2016 अहमदाबाद
- गुरू संगीत उत्सव 2016 दिल्ली
- बनारसिया बनारस 2016
- हर्षोत्सव 2016 सुर सलिला गया जी 2016 गया जी
- कान्सर्ट फॉर हारमनी जुलाई 2016 दिल्ली
- गंगा महोत्सव नवम्बर 2016 संत रविदास घाट
- बनारस प्रसार भारती भारतीय लोक सेवा प्रसारक आकाशवाणी दिल्ली
- राम कृष्ण मिशन इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चर 2017 कोलकता
- राजरानी म्युजिक फेस्टिवल जनवरी 2017 राजरानी टेम्पल भुवनेश्वर
- 5 वां इन्टरनेशनल कन्वेंशन ऑफ स्पीकमैके 2017 दिल्ली।
- स्पीक मैके 2017 जयपुर
- देहरादून सांस्कृतिक महोत्सव विरासत अप्रैल 2017 उत्तराखण्ड
- संकट मोचन संगीत समारोह 15 से 20 अप्रैल 2017 संकट मोचन हनुमान मंदिर वाराणसी।

पं. राजन साजन मिश्र जी को इनकी प्रभावशाली गायकी एवं सांगीतिक योगदान के लिए कई पुरस्कारों सम्मानों द्वारा अलंकृत किया गया। पंडित राजन - साजन जी के जीवन पर एक डाक्युमेंटरी फिल्म भी बनाई गई। इस फिल्म को "अद्वैत संगीत" नाम दिया गया। इस फिल्म को इण्डीयन पैनोरमा के सेक्शन "International Film Festival of India" (IFFI) Goa में 25 नवम्बर 2010 को दिखाया गयी। इस फिल्म

का समय 90 Minutes का है जो कि हिन्दी भाषा में है। यह फिल्म पंडित राजन - साजन मिश्र जी की ख्याल गायन शैली की परम्परा, एक उनके जीवन की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित तथ्यों पर आधारित है।

राजन- साजन मिश्र जी ने लन्दन के सुविख्यात "रॉयल अल्बर्ट हॉल" और "लिंकन केंद्र" जैसे स्थानों पर भी पूरी रात के कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। साथ ही सम्मान के रूप में पंडित राजन - साजन मिश्र जी को "यू. एस. ए. के एक शहर "बाल्टिमोर" के द्वारा भेंट स्वरूप सूचक नागरिकता भी प्रदान की गई जो अपने आप में अत्यंत सराहनीय है।

इसके अतिरिक्त उनके राष्ट्रीय स्तर पर साक्षात्कार भी समय-समय पर प्रसारित हुए हैं जिनमें से कुछ विशेष हैं।

T.V. Shows / Interviews :-

- Rajya Sabha T.V. Channel पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम 'शख्सियत', 4 मई 2012 को 30 मिनट का साक्षात्कार किया गया।

- Bansal News channel पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम "खास मुलाकात" Dec 18, 2016 को 30 मिनट का साक्षात्कार जो शरद द्विवेदी द्वारा किया गया।

- प्रोग्राम वृन्दावन धरोहर 17 दिसम्बर 2015 साक्षात्कार के साथ - साथ राग जोग में गायन प्रस्तुति 15 मिनट का यह साक्षात्कार सुशीला नारायणी द्वारा किया गया है। जिसमें तानपुरा पर रितेश मिश्र और तबले पर संदीप दास उपस्थित रहे।

- British T.V. Programme on "Improvisation in Music" जिसमें पंडित हनुमान मिश्र जिनको सिखाते दिखाए गए हैं।

यह एक Documentary Movie है।

- "Adwait Sangeet – Two voices one soul" to be screened at SAFF canada 2012's opening Gala on oct 31, 2012 in van Cover, BC, Canada

- Namaskar Bhopal कार्यक्रम भोपाल Radio channel Interviewed by संजय श्रीवास्तव

- T.v. Show Idea Jalsa, Music for the soul, Performed Gujri Todi Raag in Teentaal, Raag Jhinjhoti in Rupak Taal and Teentaal, Bhajan in Mishr Bhairavi Kehrwa Taal.

· आप दोनों को Big Bal कलाकार, Saregama Zeetv में निरणायकों के रूप में भूमिका निभाने का सुअवसर भी प्रदान हुआ। माध्यम से जिसको उन्होंने बच्चों और युवकों को शास्त्रीय संगीत के प्रति खूब प्रोत्साहित किया। शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार हेतु उन्होंने कुछ N.G.O's के साथ ही अपना पूर्ण सहयोग दिया है। Spic Macay, हरिवल्लभ संगीत सभा, जालन्धर; राग सभा, अमृतसर; नॉरथ ज़ोन कल्चरल सैंटर, पटियाला आदि। उनके शब्दों में "SPIC MACAY" को 40 साल हो रहे हैं यह संस्था बड़ी सेवा कर रही है। यह लोगों के बीच में हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार कर रही है। यह बड़ा सराहनीय काम है और उससे हम सभी कलाकारों ने सम्पूर्ण सहयोग दिया है जिसकी वजह से आज पूरे विश्व में 'Spic Macay' अपने कार्यक्रम आयोजित कर रही है। और हम लोग भी यही चाहते हैं कि युवाओं में एक छोटा Exposure हो ताकि संगीत की तालीम का विस्तार हो एवं उनके दिमाग पर निरन्तर यह भावना आती की

थी कि अच्छे - अच्छे कलाकारों को स्कूल और कॉलेज के दिनों में सुनना है और थोड़ा सा असर यह दिखता था कि "अंधेरे में दीया जलाने जैसा।"

3.3 आकाशवाणी कार्यक्रम ÷ आकाशवाणी एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा कलाकार के विभिन्न गुणों का विकास होता है। तथा उसकी दूरदर्शिता लगन साधना का भी ज्ञान होता है। आप दोनों मिश्र बन्धुओं को आकाशवाणी से काफी समय पूर्व ही कलाकार के सम्मान को प्राप्त कर चुके हैं। आपने 1973 में आकाशवाणी के लिए आवेदन दिया और आप दोनों को आकाशवाणी से 1974 में 'ए' ग्रेड़ का सम्मान दिलीप चन्द्र बेदी, सुमिति मुटाटकर, जवाहर लाल मट्टू, माधुरी मट्टू एवं भाई जी द्वारा प्राप्त हुआ। इसके पश्चात 1984 में आप दोनों को टॉप रैंक प्राप्त हुआ।

- आकाशवाणी कार्यक्रम
  1) आकाशवाणी संगीत सम्मेलन → पटना, 2004
  2) आकाशवाणी संगीत सम्मेलन → कलकत्ता, 2010
  3) National Programme → Music broadcast, 10.10.2014

- आकाशवाणी अलभ्य टेप संग्रहालय

1) Super Cassete Industry limited → Raag - Jai Jaiwanti, Time - Duration = (19:59) Raag - Basant → 1990

2) Living media India limited → Raag - Multani, Darbari Kanhada, Raag Bihag → 1991.

3) Living media India limited → Raag Durga → 1992
Time - Duration = (19:02)

4. Venus Records & Private Tapes limited → Raag- Darbari Kanhada, Shudh Kalyan, Raag Kaunsi Kanhada - 1995

3.4 टेप रिकार्डिंग ÷ मिश्र बन्धुओं ने अपने संगीत जगत को अपनी अनमोल भेंट प्रदान करते हुए लगभग 20 से अधिक एल्बम को भी प्रस्तुत किया है। जिनमें - भैरव से भैरवी तक, गोल्डन राग कलेक्शन, मोक्ष, तन मन आत्मा पवित्रीकरण, ॐ नमः शिवाय, भोर की बेला तीर्थ - काशी आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। जिनको भिन्न- भिन्न रागों की प्रस्तुतियों को प्रस्तुत किया गया है। "तीर्थ - काशी" नाम की एल्बम, कुछेक सुप्रसिद्ध भजन जैसे 'हे शिव शंकर हे गंगाधर' प्रस्तुत किये गए हैं।

शास्त्रीय संगीत के ~~प्रतिपादन~~ प्रतिपादन में इसी प्रकार टप्पा, तराना और भजन में भी मिश्र बन्धुओं को उत्कृष्टता प्राप्त है। पंडित राजन-साजन मिश्र जी द्वारा भारत की कई उत्कृष्ट संगीत कंपनियों के साथ रिकॉर्डिंग का भी कार्य किया गया है। जिसमें विशेष रूप से एच. एम. वी. (H.M.V), वर्जिन रिकार्ड्स (Virgin Records), मैगना साउंड (Megna sound), सोनी (sony), बी. एन. जी क्रेसन्डो (B.N.G. Crescendo), वीनस (Venus), टी. सीरिज (T & series) आदि मैं हैं

3.4.1 राजन- साजन मिश्र की विविध टेप रिकार्डिंगस का ब्यौरा ÷

(i) Jugal Gayaki → 1) Raag Jaijaivanti (vilambit ek taal, Eri piya Ham Jani; Drut Teentaal → Aiso Naval ladli → (T-series, 1990)
Time Duration - 19:59

Time Duration = 10:09 → 2) Raag Basant (Teen taal - Phulwa sab, Phool Rahe Ban mein) (T-series, 1990)

Time →

[ ]

3) Raag Darbari Kanhada (vilambit ek taal - Naad Aaar, Drut Teen Taal - Haar Goondh Layee Maliniya)
Time Duration → 19:02 (T-series, 1990)

4) Raag Adana (Teen Taal) - Taan kaptan, (T-series - 1990)
-Time - Duration = 10:14

5) Raag Bihag Teen Taal Tarana (10:10 → Time Duration) (T-series, 1990)

(ii) Maestro's choice: Vocal :- 1) Raag Pooriya (29:43), music Today, 1991
Duration

2) Tarana - Raga Gujari Todi (10:15) music Today, 1991
Duration

3) Tarana - Raga Gujari Todi, Raag Jaunpuri, 6:10, Music Today, 1991
Duration

4) Tarana - Raag Bhairav, 7:41, music Today, 1991
Duration

(iii) Celebration series :- Deepavali :- 1) Shree Ganpati Gajanan, Duration → 9:49, Music Today, 1998

2) Jai Bhagwati devi Namo Vara de → Duration → 9:04, music Today, 1998.

3) Maanat parra diwari Kau sukh → Duration = 11:37, Music Today, 1998.

4) Aaj Naho mere Kanwar Kanhaiya, - Duration = 11:38, music Today, 1998.

[ ]

5) Deepmaan shobhit bhavanan par, Duration = 10:59, Music Today, 1998.

6) Paan se Khelat Pritam pyare, Duration = 8:29, music Today, 1998.

(iv) The Best of Rajan and Sajan Mishra → 1) Raag Durga, 14:47, Music Today 2002

2) Raaga Multani, 6:53, Music Today, 2002

3) Raag Gurjari Todi, 9:47, Music Today, 2002

4) Raag Lalit, 8:56, Music Today, 2002

5) Raag Bhairavi, 8:17, Music Today, 2002

6) Raaga Hansdhwani, 15:08, Music Today, 2002

(v) Sangam: Michael Nyman Meets Indian Masters → 1) Three ways of Describing Rain, I Sawan, First Rain, Duration ← 19:19, company → warner music Group, 2003

2) Three ways of Describing Rain, II Rang, Colour of Nature, Duration ← 11:41, Company → warner Music Group, 2003

3) Three ways of Describing Rain: III Dhyan: Meditation, Duration → 7:19, Company → Warner Music Group, 2003

4) Compiling the Colours, Samhitha, Duration – 31:06, Company → Warner Music Group, 2003

(vi) Resonance (koonj), Pt. 2 → 1) Raag Hansdhawani, Madhyalaya Teentaal, Vighan Haran Gaj Badan Gajanan (feat pandit Sharda Sahai) → Duration → 10:28, Company → India music 4U, 2014

2) Raag Hansdhawani : Drut teentaal → Jai Jai Matangi Mata, (feat pandit sharda sahai, 2014, Indian music 4U = Company, Duration → 9:33

3) Raag Kirwani : Bhajan : Dhumali – Jagat mein Jhoothi Dekhi preet (feat. Pandit Sharda Sahai, Duration → 16:29, Indian Music 4U, 2014

(vii) Classical Icons – Pandit Rajan and Sajan Mishra –

Company ↓ living media India, Ltd 2017

1) Raag multani – ektaal (29:58)
2) Khayal, Raag Jaunpuri, Teentaal. (10:15)
3) Bhajan – Ab to shyam Naam lau lagi, Raag tilak shyam, kehrawa, Taal (16:08)

www. etv. bharat. com, www. rajansajan. com, youtube – Sansad Channel, Shadaj Putthat

निष्कर्ष :- पंडित रतन- साजन मिश्र जी की सांगीतिक पृष्ठभूमि की अवधारणा करने के उपरान्त यह बात स्पष्ट हो जाती है कि युगल जोड़ी ने बनारस घराने की ख्याल गायकी को एक नवीन दिशा व ज्ञान की है एवं बनारस घराने के उन्नयन, उत्कर्ष एवं उत्थान के एक महत्वपूर्ण माध्यम से भूमिका निभाई है। परम्परागत शास्त्रीय संगीत को ही आधार बनाकर ख्याल गायन शैली की प्रस्तुतिकरण करना उनका परम उद्देश्य रहा है। इनकी गायकी अध्यात्म -वाद से परिपूर्ण है और आपकी बंदिशों का ईश्वर से तदात्माय स्थापित कर व एक सफल माध्यम सिद्ध हुई है और आपकी बंदिशों का ईश्वर से पुरा तालमेल त्था साथ रहा है। स्वर और साहित्य का अनूठा समन्वय इस युगल जोड़ी के संगीत की आत्मा है।

पंडित गणेश प्रसाद जी शर्मा के शिष्यवृन्द द्वारा ॐ अक्टूबर ई०॥ को संगीतालोक में प्रस्तुत प० रतन मिश्र के मंगलमय 60वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में संगीत प्रस्तुति दी गई। यह प्रस्तुति इस प्रकार है।

" सूरज-चाँद संगीताकाश के रतन साजन भाई,
जुग-जुग जीवो आँख के तारे मंगल कामना आई
दसदिश दीन्हीं सुनाई।

साधना की साकार मूरत विद्या कला आधार,
कंठ ने जब-जब नाद को छुआ दिव्य हुई गुँजार,
दिव्य हुई गुँजार जगत में हो रही जय-जयकार।
गातु शारदा नाद की गंगा धरती ले आई,
जुग-जुग जीवो आँख के तारे मंगल कामना आई
दसदिश दीन्हीं सुनाई

[ ]

पिता-पुरखों की कला ज्योति ले आगे-आगे बढ़ते जाते,
राग-गान की नई कल्पना से नया संसार सजाते,
मान-पाते स्वयं जग में और कला गौरव बढ़ाते
दरसन देवें गाना सुनके कान्हा और रघुराई
जुग-जुग जीवों आँख के तारो मंगल कामना आई
दसदिशा दीन्हीं सुनाई ----

गुरुजनों का आदर करते, शिष्यों का निर्माण,
जैसी कथनी वैसी करनी करें सदा कल्याण
आसमान को छूते जाते हरिचरणों में ध्यान।
बलि-बलि जावें उन दोउन पर स्वयं शारदा माई
जुग-जुग जीवों आँख के तारो मंगल कामना आई
दसदिशा दीन्हीं सुनाई ----"

शब्द और स्वर रचना - डॉ. प्रेम सागर
संगीत संयोजन :- डॉ अलंकार सिंह,
श्री नरेश चौहान, डॉ प्रेम सागर

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक एवं संस्करण
• मिश्र, कामेश्वरनाथ =	काशी की संगीत - परम्परा (संगीत जगत को काशी का योगदान)	भारत बुक सेन्टर, लखनऊ, 1997
• पर्वतकार डॉ. वनमाला =	संगीतमय बनारस (पुराकाल से संवत 2002 तक)	शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2012.
• नाडकर्नी, मोहन =	मध्यवर्ती (मध्यप्रदेश के पन्द्रह संगीतकार	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1982
• शर्मा, डा. मनोरमा =	संगीत एवं शोध प्रविधि	हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ 1990
• बैनर्जी. डॉ. नमिता =	मध्यकालीन संगीतज्ञ एवं उनका तत्कालीन समाज पर प्रभाव	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1996

• हिन्दी पत्रिकाएं ÷ 1) संगीत कला का प्रतिनिधि मासिक अंक २, संगीत कार्यालय, फरवरी 2016
संगीत मार्च 1996
2) हमारिव हिशिमाउ पॅडड (डाउडी मैगीड है यूमॅष
3) मैगीउराउ) ओर 59, 2011
4) संगीतालोक स्मारिका 51 वां वार्षिक शास्त्रीय संगीत सम्मेलन, नव 2018

• websites ÷ http:// w.w.w. swrgyan.com | Rajanandsajanmishr. htm.
http:// www. varanasi.org.in / pandit- hanuman - prasad - mishr.
www. wikipedia. org, shodhganga. inflibnet. ac. in, The hindu. com.

• youtube channel ÷ Shadaj Baithak 2018, 1year ago.
Tag Tv, 3years ago
Sansad Tv, Sakhshiyat, 9year ago,
Tripmonko, 12year ago

[ ]

(vi) Resonance (Goonj), Pt. 2 → 1) Raag Hansdhwani, Madhyalaya Teentaal, Vighan Haran Gaj Badan Gajanan (feat. Pandit Shardha Sahai) → Duration → 10:28, Company → India Music 4U, 2014

2) Raag Hansdhwani : Drut Teentaal → Jai Jai Matangi Maati feat (Pandit Sharda Sahai, 2014, Indian Music 4U, 9:33

3) Raag Kirwani : Bhajan : Dhumali - Jagat mein Jhoothi Dekhi preet (feat. Pandit Sharda Sahai, 16:29, Indian Music 4U, 2014.

(vii) Classical Icons - Pandit Rajan and Sajan Mishra —

29:58 1) Raag multani - ektaal
10:15 2) Khayal, Raag Jaunpuri, Teentaal
16:08 3) Bhajan - Ab to Shyam Naam lau lagi, Raag tilak shyam → Keharwa taal

Company → living media India, ltd, 2017.

पंडित जी ने इसी प्रकार बहुत सी टेप रिकार्डिंग्स करी हैं, सभी की सूचना देना संभव नहीं है, 25 पेजों का ख्याल रखते हुए जितनी सूचना प्रदान कर पाए हैं, कर दी है। सभी आकाशवाणी Recordings का ब्योरा उन सब जानकारी द्वारा प्राप्त करवा दिया गया है।

www. etb. bharat.com, www. Rajan Sajan.Com, Youtube - Sanvad Channel, Baithak Baithak